2. **व्यंजन संधि**–व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, वह व्यंजन संधि कहलाता है; जैसे–

सम् + कल्प = संकल्प	जगत् + ईश = जगदीश
उत् + नति = उन्नति	वि + छेद = विच्छेद

व्यंजन संधि के कुछ नियम

1. वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तित होना (क् → ग्, च् → ज्, ट् → ड्, त् → द्, प् → ब्); जैसे–

दिक् + गज = दिग्गज		
दिक् + अंबर = दिगंबर		(क् का ग् में परिवर्तन)
अच् + अंत = अजंत		(च् का ज् में परिवर्तन)
षट् + आनन = षडानन		
षट् + दर्शन = षड्दर्शन		(ट् का ड् में परिवर्तन)
जगत् + ईश = जगदीश		
उत् + योग = उद्योग		(त् का द् में परिवर्तन)
कप् + अंध = कबंध		(प् का ब् में परिवर्तन)

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तित होना (क् → ङ्, च् → ञ्, ट् → ण्, त् → न्, प् → म्); जैसे–

वाक् + मय = वाङ्मय		(क् का ङ् में परिवर्तन)
षट् + मास = षण्मास		(ट् का ण् में परिवर्तन)
उत् + नति = उन्नति		(त् का न् में परिवर्तन)

3. छ का मेल अ, आ, इ, उ या ऋ से होने पर छ से पहले च् जुड़ जाता है; जैसे–

संधि	+ छेद	= संधिच्छेद		स्व	+ छंद	= स्वच्छंद	
वि	+ छेद	= विच्छेद		अनु	+ छेद	= अनुच्छेद	

4. ऋ, र् या ष् के बाद दूसरे शब्द में यदि न आए, तो वह ण बन जाता है; जैसे–

परि	+ नाम	= परिणाम		भूष	+ न	= भूषण	
(र	+ न	= ण)		(ष	+ न	= ण)	

5. यदि पहले शब्द के अंत में त् आए और दूसरे शब्द के आरंभ में च, छ, ज, ट, ड तथा ल आए, तो त् क्रमशः च्, छ्, ज्, ट्, ड् तथा ल् में बदल जाता है, परंतु त् के बाद यदि श् हो, तो त्–च् में तथा श्–छ में बदल जाता है। उसी प्रकार त् के बाद ह हो, तो त्–द् में तथा ह–ध में बदल जाता है; जैसे–

उत् + चारण	=	उच्चारण	(त् का च् में परिवर्तन)
तत् + छाया	=	तच्छाया	(त् का च् में परिवर्तन)
उत् + ज्वल	=	उज्ज्वल	(त् का ज् में परिवर्तन)
तत् + टीका	=	तट्टीका	(त् का ट् में परिवर्तन)
उत् + डयन	=	उड्डयन	(त् का ड् में परिवर्तन)
तत् + लीन	=	तल्लीन	(त् का ल् में परिवर्तन)
उत् + श्वास	=	उच्छ्वास	(त्–च्, श्–छ में परिवर्तन)
उत् + हरण	=	उद्धरण	(त्–द्, ह–ध में परिवर्तन)

व्यंजन संधि के नियमों को पढ़कर उनको कॉपी में लिखिए।